सूरदास और नंददास के भँवरगीत की तुलना

डॉ. आर.पी. वर्मा
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

सूरदास और नंददास दोनों ने भ्रमरगीत के आख्यान को श्रीमद्भगवदगीता से लिया, पर इन दोनों कवियों की वस्त विन्यास कला और शैली में महान अंतर लक्षित होता है। यह ठीक है कि दोनों कवि बल्लभ सम्प्रदाय के भक्त थे। दोनों की कथा के चरित्र भी समाज हैं। उद्देश्य की दृष्टि से भी दोनों में समानता लक्षित होती है। इसकी दृष्टि से भी दोनों कवियों ने विोग श्रृंगार की ही प्रधानता रखी है। पर इन समताओं के होते हुए भी भाव सौंदर्य, प्रेम प्रसंगों की उद्भावना, विरह का मर्मस्पर्शी स्वरूप अंकन तथा कलात्मक वैशिष्ट्य के कारण दोनों में महान अंतर दिखाई पड़ता है।

नंददास के 'भंवरगीत' में सूरदास जी के 'भ्रमरगीत' जैसा भाव–विस्तार एवं भाव गांभीर्य नहीं पाया जाता। भाव का जो सागर सूर में है, वह नंददास के भंवरगीत में कहां? नंददास का भंवरगीत अत्यंत संक्षिप्त है। सूर की तरह विरहिणी गोपियों के हृदय की अनेक दशाओं का मनोवैज्ञानिक वर्णन नंददास नहीं कर सके। गोपिकाओं के प्रेम की उत्कृष्टता का वर्णन, अनेक परिस्थितियों और अवस्थाओं, हृदय की मार्मिक दशाओं के सूर जैसे वर्णन की अपेक्षा बाहरी अनुभावों, सात्विक, और वाचिक द्वारा ही नंददास ने मुख्य रूप से किया है। उनके उपालंभ संबंधी पदों में ही हृदय की खीझ, दीनता आदि भावनाएं व्यक्त हैं। सूर की गोपियों जैसा आत्मनिवेदन, आत्मभर्त्सना, संबंध भावना एवं उन्माद अभिलाषी, चिन्ता व्याधि आदि अनेक दशाएं नंददास की गोपियों के विरह पक्ष में नहीं मिलती। इस प्रकार भाव की दृष्टि से सूर का भ्रमरगीत काव्योपयुक्त अधिक है।

सूरदास ने संबंध भावना के अनेक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। जैसे–

(क) ऊधो! हम आजु भई बड़भागी।
जिन अंखियन तुम स्याम विलोके ते अंखियां हम लागी।।

(ख) ऊधा? या लागों भल आए।
तुम देखे जनु माधत देखे, तुम तै ताप नसाए।।

इसी प्रकार प्रकारा, सूरसागर में स्मृति और पश्चाताप के कई सुंदर उदाहरण हैं। जैसे–

मेरे मन इतनी सूल रही।
वे बतियां छतियां लिखि राखी, जे नंदलाल कही।।

सूर ने गोपियों के हृदय की अनेक मार्मिक झांकियां सूरसागर में प्रस्तुत की हैं। सूर की गोपियों की अंखिया हरि दरसन की प्यासी हैं। आंखों ने भी जिन्हें विवश कर रखा है। उद्धव चाहें तो वे अपनी जिह्वा के टुकड़े–टुकड़े करके भी निर्गुण की रट लगा सकते हैं, पर आंखों का क्या करें।

मधुकर हम जौ कहौ करें।
पठयो है गोपाल कृपा के आयसु ते न टरै।।
रसना वारि फेरि नवखण्ड कै निगगुन के साथ।

इतनी विलग तनक जनि मानहु अंखियां नाही हाथ।।

सूरदास ने राधा की मूल व्यथा, मलिन और दीन दशा का भावपूर्ण चित्रण किया है, वह नंददास के भंवरगीत में कहीं ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगा। साथ ही साथ उन्होंने मातृ हृदय में उठने वाली भाव तरंगों को भी रूपायित करने की चेष्टा की है। सूरदास के भ्रमरगीत में माता यशोदा देवकी के नाम जो संदेश भेजती हैं, उसमें यशोदा के हृदय की ममता साकार हो उठी है–

संदेसो देवकी सों कहियो।

हौं तो धाय तिहारे सुत की मना करत ही रहियो।।

इस प्रकार सूरदास के भ्रमरगीत में भावों का एक विशाल उद्वेलन है और हृदय में उठने वाली अनेक भाव लहरियों के चित्र हैं, किंतु नंददास में यह बात नहीं है।

नंददास के भंवरगीत में कथा की इतनी प्रधानता नहीं है, इसलिए अनेक प्रसंगों और परिस्थितियों से उत्पन्न विभिन्न भावों का उसमें समावेश नहीं हो सका। आरम्भ में प्रस्तावना भी नहीं है। सूरदास ने अपने भ्रमरगीत के प्रारम्भ में कृष्ण की गोकुल विषयक चिंता तथा ग्वाल, गोव, गोपिकाओं, माता–पिता आदि सबके प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति की है। कृष्ण के हृदय की इस झांकी का नंददास के भंवरगीत में सर्वथा अभाव है। इसके अतिरिक्त उद्ध0 का अहंकार, कृष्ण का उद्धव के अहंकार को मिटाने के लिए ब्रज भेजना, नन्द यशोदा गोपिकाओं को सन्देश, उद्धव की ब्रजयात्रा, उनका ब्रज प्रवेश आदि अनेक बातों की पृष्ठभूमि के कारण सूरदास के भ्रमरगीत में कथा प्रसंगों को भी महत्व मिला है। उद्धव के ब्रज प्रवेश और गोपियों के, उन्हें दूर से देखकर, कृष्ण समझने जैसा मनोवैज्ञानिक चित्रण सूर ने किया है वह नंद के भंवरगीत में नहीं है। गोपियों का पहले उद्धव को कृष्ण समझकर तथा पीछे उनके स्थान पर उद्धव को पाकर निराश होना और अपनी खीझ एवं उपालंभ को प्रकट करना स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक है। इस प्रकार के घटनाक्रम के पश्चात सूरदास ने उद्धव से संदेश दिलाया है। नंददास में इसके विपरीत उद्धव जी एकाएक गोपियों में आ धमकते हैं जैसे उपदेश की गठरी उनके सिर पर बंधी हो और उसके बोझ से दबे हुए वे अपने को एकदम हल्का करना चाहते हों।

सूर और नंद के भ्रमरगीत में प्रेम चित्रण की शैली में भी भेद है। नंददास की गोपियां सूरदास की गोपियों से अधिक तार्किक हैं। निर्गुण उपासना का प्रसंग हो या योग का वे उद्धव निरूपाय होकर दूसरा विषय छेड़ देते हैं। किंतु सूरदास की गोपियां तर्क जानती ही नहीं। वे स्वीकार कर लेती हैं कि योग और निर्गुण, मार्ग बहुत अच्छा है, पर अबला ग्वालिनें योग कैसे करेंगी? उनका एक ही तर्क है–ऊधो योग की बात मत सिखाओ। कुछ ऐसी बात बताओं जिससे प्यार मिलें। इस सादगी के सामने बड़े–बड़े तर्क चूड़ामणि मौन हो जा सकते हैं। उद्धव जहां कुछ ज्ञान कथा शुरू करते, वहीं सरल प्रेम का ऐसा महासागर उमड़ पड़ता है कि जो कुछ कहा, वह न जाने कहां बह जाता है। नंद के उद्धव को तर्क में परास्त होना पड़ता है। सूर के उद्धव अपना तर्क समझा ही नहीं पाते। उन्हें विजयी होने का मौका ही नहीं मिलता। इसी को लक्ष्य कर सूर साहित्य में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा हैं–नंददास की गोपियां युक्ति से प्रेम की महिमा स्थापित करती है, सूरदास की गोपियों के पास विरह का ऐसा खजाना है, कि उसी को बांटने से फुरसत नहीं मिलती। युक्ति और तर्क कौन करे। इस प्रकार सूर के भ्रमरगीत में हृदय पक्ष प्रधान है और नंद के भंवरगीत में बुद्धि पक्ष। नंददास का प्रेम मस्तिष्क की ओर से जाता है, सूरदास की हृदय की ओर से। नंददास उक्ति और तर्क को शुरू में ही नहीं भूल जाते हैं। सूर

के यहां भूलने, न भूलने का सवाल ही नहीं। सूर की गोपियां प्रेम में बाबरी हैं और नंद की गोपियां शास्त्र में निष्णात।

दोनों भ्रमरगीतों में कृष्ण का प्रसंग भी मनोरंजक है। सूरदास की गोपियां कुबजा की खूब खबर लेती हैं और भाग्य को दोष देकर रह जाती हैं। किंतु नंददास की गोपियां बौखला जाती हैं और अनेक प्रकार की बातें कह डालती हैं। जैसे–

कोउ कहै रे मधुप तुम्हें लज्जा नहीं आवै।
सखा तुम्हारे स्याम कूबरीनाथ कहावै।।
यह पदवी नीची हूती गोपीनाथ कहाय।
अब जदुकुल पावन भायौ दासी जूठन खाय।।
भरत कह बोल दो।।

सूर के भ्रमरगीत में राधा प्रधान विरहिणी के रूप में आई है पर नंददास के भंवरगीत में उसका उल्लेख तक नहीं है।

सूर के भ्रमरगीत में उद्धव, नंद, यशोदा तथा गोपियों से मिलते हैं, किंतु नंददास के भंवरगीत में वे केवल गोपियों से मिलते हैं।

सूर की गोपियां विरह में पूर्णतः मग्न हैं, किंतु नंददास की गोपियां विरह में भी संयोग मान लेती है। वे विरह के समय भी अपने बीते समय के संयोग की अध्ययन करके जैसे उसका अनुभव भी करने लगती हैं। केवल नंददारस ने ही विरह का ऐसा सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। फिर भी सूर के भ्रमरगीत में मनोवैज्ञानिक चित्रों का जितना बाहुल्य है, उतना नंददास के भंवरगीत में नहीं है।

उपालंभ काव्य की दृष्टि से भी सूर का भ्रमरगीत अधिक श्रेष्ठ है। आचार्य शुक्ल ने सूर के भ्रमरगीत को उपालंभ काव्य का श्रेष्ठ रूप स्वीकार किया है। नंददास के भंवरगीत में भी कृष्ण और भ्रमर को लक्ष्य करे उपालंभ की अनूठी पंक्तियां बांधी गई हैं। किंतु उनमें सूर के जैसा स्वारस्य नहीं है।

सूर ने तीन भ्रमरगीत लिखे हैं, नंददास ने केवल एक। शुद्ध दार्शनिकता की दृष्टि से नंददास का भंवरगीत सूर के भ्रमरगीत से अधिक महत्तवपूर्ण है।

कला पक्ष

इन दोनों भ्रमरगीतों के कलात्मक सौष्ठव में भी पर्याप्त अंतर है। काव्य रूप की दृष्टि से सूर की शैली शुद्ध गीत शैली है। नंददास ने वार्तालाप की नाटकीय शैली अपनाई है और खण्डकाव्य के ढ़ंग पर रचना की है।

भाषा की दृष्टि से नंददास के भंवरगीत की भाषा सूर की अपेक्षा श्रेष्ठ है। डॉ. दीनदयाल गुप्त ने इस संबंध में लिखा है कि–भाषा का लालित्य नंददास के भंवरगीत में सूर की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है। किंतु यह अतिश्योक्तिपूर्ण कथन प्रतीत होता है। सूर की भाषा में एक सहज प्रवाह है और ब्रज की माधुरी है, पर नंददास की भाषा में परिमार्जन और आनुप्रासिक सौंदर्य है। उनकी विदुषी गोपियां शास्त्रों में प्रयुक्त शब्दों का प्रयोग करती है। किंतु सूर की गोपियां भाव के अविरल प्रवाह के सामने भाषा के सहज प्रसन्न रूप को स्वीकार करती हैं।

सूर का छंद पद है किंतु नंददास ने एक मिश्रित छंद अपनाया है। जिसका प्रयोग सूरदास अपने संक्षिप्त भ्रमरगीत में कर चुके हैं। किंतु दस मात्राओं की टेक नंददास का मौलिक प्रकार है। इस प्रकार रोल छंद के दो चरण, एक दोहा और अंत में दस मात्राओं का एक चरण जोड़ दिया गया है।

रस की दृष्टि से सूर का भ्रमरगीत विप्रलंभ श्रृंगार का उत्तम निदर्शन है। और उसमें वियोग की अनेक अर्न्तदशाओं के रम्य चित्र स्वभावतः आ गए हैं। किंतु नंददास का वियोग

पक्ष वर्णन उतना सरस और प्रभावशाली नहीं बन पाया है, क्योंकि उनकी गोपियां अत्यंत तार्किक और शास्त्र निष्णात हैं। यत्र तत्र नाम स्मरण और रूप स्मरण के कारण ब्रज वनिताओं के मुरझाने का उल्लेख अवश्य है, पर सूर जैसी रमणीयता नहीं।

इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टि से सूर का भ्रमरगीत नंददास के भंवरगीत की अपेक्षा उदात्त है, प्रशस्त है, किंतु नंददास के भंवरगीत की अपनी विशेषताएं इस प्रसंग में विस्तृत नहीं होनी चाहिए। वस्तुतः नंददास का भंवरगीत एक क्रमबद्ध पद्य निबंध के रूप में उपस्थित किया गया है। सूर में यह विशेषता नहीं। उनके भंवरगीत में जो बौद्धिक तर्क है, उसका भी अपना महत्व है। उन्होंने सगुण निर्गुण, ज्ञान योग और भक्ति के वाद विवाद को पर्याप्त मनोरंजक बनाने का प्रयत्न किया है और सूर की अपेक्षा नंद के भंवरगीत में पुष्टिमार्गीय भक्ति का स्वरूप अत्यंत स्पष्ट रूप में अंकित हुआ है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए नंद के भंवरगीत की तुलनात्मक दृष्टि से सूर से कुछ ही कम माना जा सकता है। यह ठीक है कि सूर के भ्रमरगीत की जैसी विविधता उसमें नहीं है, पर निबंध रूप में होने से रसधारा का आनंद प्रवाह अवश्य मिलता है। इस प्रकार सूर का भ्रमरगीत यदि पुष्पवाटिका है, तो नंददास का भंवरगीत चुना हुआ पुष्पगुच्छ।

संदर्भ

- सूरदास और नंददास के भवरगीत की तुलना–डॉ. शशि किरण, पृ. 9
- हिंदी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 81
- सूरदास और नंददासः भंवरगीत–डॉ. अनीश कुमार, पृ. 118
- सूरदास और नंददास के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन–रामफेर त्रिपाठी, पृ.8
- हिंदी साहित्य का वस्तुपरख इतिहास–डॉ. राम प्रसाद मिश्र, पृ. 142
- आधुनिक बृजभाषा काव्य परम्परा में पारावारब्रजकौं काव्य का काव्यशास्त्री एवं समाज मनोवैज्ञानिक मूल्याकंन–डॉ. आर. पी. वर्मा, पृ. 111